माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के परिवारिक वातावरण की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन"

Dr. Ashok Kumar, Assistant Professor, Vivekananda College of Education, Johlaka Sohna, Gurugram

शोध सार

इस शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के शहरी एंव ग्रामीण छात्रों के परिवारिक वातावरण की स्थिति का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के शहरी एंव ग्रामीण छात्रों के परिवारिक वातावरण की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है" का निर्माण किया । शोधकर्ता ने शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया एवं प्रदत्त संकलन हेतु सम्भाव्य– न्यादर्श के अन्तर्गत यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया तथा छात्रों की पारिवारिक स्थिति को जानने के लिए डा0 शैलवाला सक्सेना तथा अलिया अख्तर के होम इन्वायरमेन्ट स्केल (HES) का प्रयोग किया और निष्कर्ष रुप में पाया कि शहरी क्षेत्र के छात्रों की पारिवारिक स्थिति ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों से अपेक्षाकृत बेहतर है।

मुख्य शब्दावलीः माध्यमिक स्तर, ग्रामीण एंव शहरी,पारिवारिक वातावरण

प्रस्तावना

पारिवारिक सम्बन्ध पूर्णतः पारिवारिक वातावरण के ऊपर निर्भर करता है जैसा पारिवारिक वातावरण होगा उसी प्रकार का पारिवारिक सम्बन्ध परिवार के सदस्यों के मध्य देखा जा सकता है। अतः परिवार ही संस्था है जहाँ से बच्चे का सर्वांगीण विकास संभव है। यदि परिवार विघटित है तो बच्चों का पूर्णतः विकास असम्भव है। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों के उचित विकास हेतु पारिवारिक वातावरण सौहार्द्र पूर्ण तथा सानुकूल होना चाहिए। जिससे उनमें स्नायुविक रोग के लक्षण प्रदर्शित न होने पायें बच्चों में वातावरण के प्रति समायोजन करने की क्षमता भी परिवार से ही आरम्भ होती है। अतः बाल विकास हेतु पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन यहाँ अपेक्षित है। बच्चों के विकास पर पारिवारिक सम्बन्धों का प्रभाव–परिवार वह प्रथम स्थान है जहाँ बच्चा सम्बन्ध स्थापित करना सीखता है। किम्बलयंग उद्धृत– भार्गव, लक्ष्मी, "शिक्षा के सामाजिक परिप्रेक्ष्य", 2007 के अनुसार– "समाज के अन्दर विभिन्न साधनों में परिवार सबसे महत्वपूर्ण है।"

परिवार ही बच्चों का सबसे महत्वपूर्ण स्थायी साधन है। इसका एकमात्र कारण यह है कि बच्चे की विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार से ही आरम्भ होती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी अवस्थाओं से गुजरता हुआ वह परिवार का सदस्य बना रहता है। परिवार के मध्य विभिन्न सदस्यों के साथ पारस्परिक अन्तर्क्रियात्मक सम्बन्ध बालविकास को प्रभावित करते है। क्लार्क एंव वान सोमर्स के अनुसार परिवार ही बच्चो ं का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक तन्त्र है। इसी प्रकार से बोसार्ड एंव बाल (उद्धृत– मिश्रा, पी0सी0, आज का विकासात्मक मनोविज्ञान, 2002) का मत है कि घर वह स्थान है जहाँ बच्चे अनुभवों के साथ वापस लौटते है, बालकों के लिए यह एक माँद है जहाँ वह अपने को सुरक्षित करते है। उसके उपलब्धियों के गौरव को प्रदर्शित करने का एक मंच है तथा अपने व्यवहारों, वास्तविकताओं और कल्पनाओं पर चिन्तन करने का स्थान है, घर वह स्थान है जहाँ पर बच्चे अपने दैनिक व्यवहार, अनुभवों, सामाजिक अनुभवों तथा व्यवहार आदि का मूल्यांकन, परीक्षण तथा परिवर्तन आदि करते है। परिवार के अन्दर सभी सदस्य बाल विकास को अलग–अलग तरह से प्रभावित करते है। परिवार के अन्दर माता–पिता का स्थान बाल विकास के सन्दर्भ

में महत्वपूर्ण माना गया है।परिवार ही संस्था है जहाँ से बच्चे का सर्वांगीण विकास संभव है। यदि परिवार विघटित है तो बच्चों का पूर्णतः विकास असम्भव है। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों के उचित विकास हेतु पारिवारिक वातावरण सौहार्द्र पूर्ण तथा सानुकूल होना चाहिए।

परिवर्तन एक सार्वभौमिक तत्व हैं। समाज और उसका कोई भी अंग परिवर्तन के प्रभाव से बच नही सकता। अनेक परिवर्तनों के उपरान्त भी परिवार के बने रहने का मुख्य कारण इसके द्वारा मौलिक कार्यों की पूर्ति है। अतः परिवार का भविष्य अन्धकारमय नहीं है। अतः बाल विकास हेतु पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन यहाँ अपेक्षित है। अतः यह जानने की आवश्यकता महसूस हुई कि माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण एंव शहरी छात्रों के पारिवारिक वातावरण की स्थिति के प्रति अभिवृत्ति कैसी है? इसलिए शोधार्थी ने ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के परिवारिक वातावरण को अपने शोध विषय के रूप में चुना।

समस्या कथन–

"माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के परिवारिक वातावरण की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के शहरी एंव ग्रामीण छात्रों के परिवारिक वातावरण की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

माध्यमिक स्तर के शहरी एंव ग्रामीण छात्रों के परिवारिक वातावरण की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध की समस्या, उद्देश्य एवं परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का अनुसरण किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सम्भाव्य– न्यादर्श के अन्तर्गत यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक विद्यालयों की छात्रों की पारिवारिक स्थिति को जानने के लिए डा0 शैलवाला सक्सेना तथा अलिया अख्तर के होम इन्वायरमेन्टस्केल (HES) का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना का परीक्षण

"माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों की पारिवारिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु टी– अनुपात (t-test) का प्रयोग किया गया है जिससे प्राप्त परिणाम निम्न तालिका में प्रदर्शित किया है।

तालिका संख्या 01

छात्र समूह	प्रतिदर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	'टी'मान (t-test)	सार्थकता स्तर 0.05 / 0.01	
शहरी छात्र	63	166-54	30.875	7.321	1.96	2.58
ग्रामीण छात्र	37	131.75	16.61			

तालिका संख्या 01 से स्पष्ट है कि शहरी छात्रों तथा ग्रामीण छात्रों की स्थिति के मध्यमान क्रमशः 166.54 तथा 131.75 प्राप्त हुए है जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमश 30.875 तथा 16.61 है। दोनों मध्यमानों की तुलना करने पर (t-test) टी परीक्षण अनुपात का मान 7.321 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्यों क्रमश 1. 96 तथा 2.58 से अधिक है। शोध कार्य से पूर्व बनायी **शून्य परिकल्पना अस्वीकृत** होती है। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों की पारिवारिक स्थिति में सार्थक अन्तर है। शहरी छात्रों का मध्यमान ग्रामीण छात्रों के मध्यमान से अधिक है। अतः यह कहा जाता सकता है कि शहरी क्षेत्र के छात्रों की पारिवारिक स्थिति ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों से अपेक्षाकृत बेहतर है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों की पारिवारिक स्थिति में सार्थक अन्तर है। शहरी क्षेत्र के छात्रों की पारिवारिक स्थिति ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों से अपेक्षाकृत बेहतर है।

सन्दर्भ

- अग्रवाल,रीना (2007) परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति, एक अवलोकन,भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष अंक–2, जुलाई–दिसम्बर
- पंवार,एस,एवं उनियाल एन0पी0 (2008) उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालक के समायोजन एवं माता–पिता का उनके प्रति व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन'
- प्राथमिक शिक्षक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधन और प्रशिक्षण परिषद् वर्ष 33, अंक 1, जनवरी
- भार्गव, लक्ष्मी (2007) शिक्षा के सामाजिक परिप्रेक्ष्य, वंदना पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- दोषी, एस0एल0, जैन पी0सी0, (1998) समाजशास्त्र नई दिशायें, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,
- Burgess E.W. & Locke, H.J. (1963) the Family, American Book, New York.
- Chaterji, S.; Mukerji, M. Benerji, S.N. (1971) : Effect of certain socioeconomic factor on the scholastic achievement of the school, children, psohomental research and service unit, Ist, Calcullta.
- Caplin, M.D. (1968) 'Self-concept, level of aspiration and Academic Achievement. JI of Negro Education.
- Dhoni, G.S. (1974) Intelligence, Emotional Maturity and socio-economic status as factors indicator of success in scholastic achievement, Ph.D. Edu., Pan. U.,
- Dreeban, R (1968) 'On what is learned in school. Addison-Wesley publishing Co.
- Desai, I.P. (1956) "the joint family in India"; Analysis, sociological Bulletin,Vol. 5 No. 2 September